C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड-क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6) 8

एक समय की बात है। कन्नौज में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे नित्य लोगों को बुराईयों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। उनकी वाणी का अच्छा प्रभाव होता था। लोग भी उनका मान-सम्मान करते थे। एक दिन वे नशे की बुराईयाँ लोगों को बतला रहे थे। भीड़ में से एक व्यक्ति बाहर निकला और बोला, महात्मन, मुझे अफ़ीम खाने की आदत है, मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ, पर छूटती ही नहीं। क्या आप मुझे इसका कोई उपाय बतलाएँगे? महात्मा ने कहा, अवश्य, तुम आज शाम को मेरे आश्रम पर आना, मैं तुम्हें इसकी तरकीब समझाऊँगा। शाम के समय जब वह व्यक्ति आश्रम पर पहुँचा तो महात्मा जी भजन में लगे थे। वह बैठकर प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद महात्मा जी निवृत्त हुए और उठकर इधर-उधर टहलने लगे। वह व्यक्ति भी महात्मा जी का अनुसरण करने लगा।

कुछ समय यों ही बीत गया। अधीरता-से उस व्यक्ति ने महात्मा जी से पूछा, महात्मा जी, मैं वह तरकीब पूछने आया हूँ जिससे अफ़ीम खाने की आदत छूट सके।

महात्मा जी ने एक दृष्टि उस व्यक्ति पर डाली और बोले, तो तुम सचमुच अफीम की आदत छोड़ना चाहते हो?

जी! उस आदमी का उत्तर था, मैं इससे बहुत परेशान और दु:खी हूँ।

ठीक! कहकर महात्मा जी ने एक लता को अपनी बाहु में लपेट लिया और बोले, मैं तुम्हें इसका उपाय कैसे बताऊँ यह लता तो मुझे छोड़ ही नहीं रही है।

पहले तो वह आदमी भौंचक्का-सा होकर महात्मा जी को देखने लगा, फिर कुछ झिझककर बोला, महात्मन, क्षमा करें, क्या लता भी आदमी को पकड़ सकती है?

महात्मा बोले, अरे भाई! मैं भी यही कहता हू कि क्या कोई भी बुराई आदमी को पकड़ सकती है? तुम दृढ़ संकल्प के साथ शराब को छोड़ो, तो छूटेगी कैसे नहीं!

आदमी ने महात्मा को प्रणाम किया और घर लौट गया।

1. कन्नौज में कौन रहते थे और वे क्या करते थे? एक दिन वे क्या बतला रहे थे?
2. आदमी आश्रम में पहुँचकर किसका इंतजार करने लगा और क्यों?
3. महात्मा जी ने लता को क्यों लपेट लिया तथा वे आए हुए आदमी को क्या समझाना चाहते थे?
4. आदमी भौंचक्का क्यों रह गया?
5. उपर्युक्त गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या ख़ाक बनाएँगे घर

हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग केजन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?
2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?
3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

पुजारी ! भजन, पूजन, साधन, आराधना
इन सबको किनारे रख दे।
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन-सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर देख तो सही
तेरा देवता देवालय में नहीं है।
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,
तेरा देवता वहीँ चला गया है।

1. कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?
2. कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 1

भुलावा, फिरौती

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: 1

अतिवृष्टि, आलेख

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1

उपग्रह, प्रतिवर्ष

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

चलन, पालनहार

ड.) निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखें: 3

1. पंचतत्व 2. गिरिधर 3. लेन-देन

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: 4

1) वह एक अच्छी लड़की है।

2) क्या आप कल पाठशाला जायेंगे?

3) आप यहाँ बैठ जाइए।

4) संभवत: वह पहुँच गया होगा।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: 4

1. कर कह जाता कौन कहानी

2. माला फेरत जुग भया, फिरा ना मन का फेर

3. सुरवन को ढूँढत फिरत, कवि व्यभिचारी, चोर

4. हाय! फूल सी कोमल बच्ची
   हुई राख की ढ़ेरी।

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। कोई चीज़ जो परत-पर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आज़माया।

तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी तो निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है। सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई रास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती है।

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमज़ोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमज़ोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी ज़ंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुसकरा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

तुम्हारी यह पाँव की अँगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

तुम क्या उसकी तरफ़ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता फाड़ लिया?

मैं समझता हूँ। तुम्हारी अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यंग्य-मुसकान भी समझता हूँ।

1. उपर्युक्त गद्यांश में किस व्यक्तित्व की चर्चा की गई है?
2. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भो को इंगित करने के लिए किया गया होगा?
3. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो? - पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती क्यों थी?

2. 'मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।' इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?
3. उस समय के तिब्बत में हथियार का क़ानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?
4. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2+2+1)=5

माँ की समझाइश के बाद
दक्षिण दिशा में पैर करके मैं कभी नही सोया
और इससे इतना फायदा जरुर हुआ
दक्षिण दिशा पहचानने में
मुझे कभी मुश्किल का सामना नही करना पड़ा
मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया
और हमेशा मुझे माँ याद आई
दक्षिण को लाँघ लेना सम्भव नहीं था
होता छोर तक पहुँच पाना
तो यमराज का घर देख लेता
पर आज जिधर पैर करके सोओं
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आखों सहित विराजते हैं
माँ अब नही है
और यमराज की दिशा भी अब वह नहीं रही
जो माँ जानती थी

1. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?
2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?
3. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. मोट खींचता लगा पेट पर जुआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?
3. क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी, क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. 'सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

प्र. 9. "....आपके लाड़ले बेटे के की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं ...." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है? 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

- प्लास्टिक की थैलियाँ - एक अभिशाप
- प्रकृति

प्र. 11. आपके विदयालय में कुछ अतिथि आए थे, जिनकी देखभाल की जिम्मेदारी आपको सौंपी गई थी। अपनी माता जी को पत्र लिखकर बताइए कि वे अतिथि विद्यालय में क्यों आए थे और उनके लिए क्या-क्या किया। 5

प्र. 12 दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विषय में माता और पुत्री के बीच होनेवाला संवाद लिखिए। 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड-क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×3=6) 8

एक समय की बात है। कन्नौज में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे नित्य लोगों को बुराईयों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। उनकी वाणी का अच्छा प्रभाव होता था। लोग भी उनका मान-सम्मान करते थे। एक दिन वे नशे की बुराईयाँ लोगों को बतला रहे थे। भीड़ में से एक व्यक्ति बाहर निकला और बोला, महात्मन, मुझे अफ़ीम खाने की आदत है, मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ, पर छूटती ही नहीं। क्या आप मुझे इसका कोई उपाय बतलाएँगे? महात्मा ने कहा, अवश्य, तुम आज शाम को मेरे आश्रम पर आना, मैं तुम्हें इसकी तरकीब समझाऊँगा। शाम के समय जब वह व्यक्ति आश्रम पर पहुँचा तो महात्मा जी भजन में लगे थे। वह बैठकर प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद महात्मा जी निवृत्त हुए और उठकर इधर-उधर टहलने लगे। वह व्यक्ति भी महात्मा जी का अनुसरण करने लगा।

कुछ समय यों ही बीत गया। अधीरता-से उस व्यक्ति ने महात्मा जी से पूछा, महात्मा जी, मैं वह तरकीब पूछने आया हूँ जिससे अफ़ीम खाने की आदत छूट सके।

महात्मा जी ने एक दृष्टि उस व्यक्ति पर डाली और बोले, तो तुम सचमुच अफीम की आदत छोड़ना चाहते हो?

जी! उस आदमी का उत्तर था, मैं इससे बहुत परेशान और दु:खी हूँ।

ठीक! कहकर महात्मा जी ने एक लता को अपनी बाहु में लपेट लिया और बोले, मैं तुम्हें इसका उपाय कैसे बताऊँ यह लता तो मुझे छोड़ ही नहीं रही है।

पहले तो वह आदमी भौंचक्का-सा होकर महात्मा जी को देखने लगा, फिर कुछ झिझककर बोला, महात्मन, क्षमा करें, क्या लता भी आदमी को पकड़ सकती है?

महात्मा बोले, अरे भाई! मैं भी यही कहता हू कि क्या कोई भी बुराई आदमी को पकड़ सकती है? तुम दृढ़ संकल्प के साथ शराब को छोड़ो, तो छूटेगी कैसे नहीं!

आदमी ने महात्मा को प्रणाम किया और घर लौट गया।

1. कन्नौज में कौन रहते थे और वे क्या करते थे? एक दिन वे क्या बतला रहे थे?

   उत्तर : कन्नौज में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे नित्य लोगों को बुराईयों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। एक दिन वे नशे की बुराईयाँ लोगों को बतला रहे थे।

2. आदमी आश्रम में पहुँचकर किसका इंतजार करने लगा और क्यों?

   उत्तर : आदमी आश्रम में पहुँचकर महात्मा जी के भजन से उठने का इंतज़ार करने लगा, क्योंकि वह उनसे अफ़ीम छोड़ने की तरकीब जानना चाहता था।

3. महात्मा जी ने लता को क्यों लपेट लिया तथा वे आए हुए आदमी को क्या समझाना चाहते थे?

   उत्तर : महात्मा जी ने नशे की बुराईयों को अप्रत्यक्ष रूप से समझाने के लिए लता को लपेट लिया। इसके द्वारा वे समझाना चाहते थे कि बुराईयाँ इनसान को नहीं पकड़ती, बल्कि इनसान ही बुराईयों को पकड़ लेता है।

4. आदमी भौंचक्का क्यों रह गया?

उत्तर : महात्मा जी ने लता को अपने हाथ में लपेटकर कहा कि वे उसे तरकीब तो अवश्य बताते, पर इस लता ने उन्हें पकड़ लिया है तथा छोड़ ही नहीं रही है। यह सुनकर आदमी भौंचक्का रह गया।

5. उपर्युक्त गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश से हमें शिक्षा मिलती है कि बुराईयाँ इनसान को नहीं पकड़ती बल्कि इनसान बुराईयों को पकड़ता है, तथा वह जब चाहे दृढ़-निश्चय के बल पर बुराई को छोड़ सकता है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन!
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वतन?
अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन।
देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शिणित उद्वेलन।
हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या ख़ाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?
ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग केजन।

1. कवि अपने को कैसा बताता है और क्यों?

उत्तर : कवि अपने आप बिना घर-बार का बताता है। वह ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि वह तो रमता राम है, वह घूमता-फिरता रहता है। उसका न तो कोई घर है, न कोई ठिकाना और न ही उसका कोई देश है।

2. कवि का अब तक का जीवन कैसा कटा है?

उत्तर : कवि ने अपना जीवन घूमने-फिरने में ही व्यतीत कर दिया है। कवि ने फकीराना जीवन जीया है और वैसे ही रहना चाहता है। वह अब किसी नई परिपाटी को नहीं सीखना चाहता है।

3. कवि अपना (सदन) घर बनाने को इच्छुक क्यों नहीं है?

उत्तर : कवि अपना घर बनाने का इच्छुक इसलिए नहीं है क्योंकि वह किसी बंधन में बँधकर नहीं रहना चाहता। कवि ने अनुभव किया है कि घर बनाने के चक्कर में लोगों का अपनापन चला गया।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

पुजारी ! भजन, पूजन, साधन, आराधना
इन सबको किनारे रख दे।
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन-सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर देख तो सही
तेरा देवता देवालय में नहीं है।
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,
तेरा देवता वहीँ चला गया है।

1. कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर : कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में कहते हैं कि वे इन सभी को एक तरफ रख दें।

2. कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

उत्तर : कवि के अनुसार देवता पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार करने वाले अर्थात् मजदूरी करने वाले मजदूरों के दिलों में चले गए हैं।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: 1

भुलावा, फिरौती

उत्तर : आवा, औती

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: 1

अतिवृष्टि, आलेख

उत्तर : अति, आ

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: 1

उपग्रह, प्रतिवर्ष

उत्तर : उप+ग्रह, प्रति+वर्ष

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

चलन, पालनहार

उत्तर : चल + अन, पालन + हार

ड.) निम्नलिखित समस्त पद का विग्रह कर समास का नाम लिखें: 3

1. पंचतत्व 2. गिरिधर 3. लेन-देन

समस्त पद	विग्रह	समास

पंचतत्व	पांच तत्वों का समूह	द्विगु
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	बहुब्रीहि
लेन-देन	लेन और देन	द्वंद्व

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: 4

1) वह एक अच्छी लड़की है।
उत्तर : विधानार्थक वाक्य

2) क्या आप कल पाठशाला जायेंगे?
उत्तर : प्रश्नार्थक वाक्य

3) आप यहाँ बैठ जाइए।
उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

4) संभवत: वह पहुँच गया होगा।
उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: 4

1. कर कह जाता कौन कहानी
उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. माला फेरत जुग भया, फिरा ना मन का फेर
उत्तर : यमक अलंकार

3. सुरवन को ढूँढत फिरत, कवि व्यभिचारी, चोर
उत्तर : श्लेष अलंकार

4. हाय! फूल सी कोमल बच्ची
हुई राख की ढ़ेरी।

उत्तर : उपमा अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। कोई चीज़ जो परत-पर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आज़माया।

तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी तो निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है। सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई रास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती है।

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमज़ोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमज़ोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी ज़ंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुसकरा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

तुम्हारी यह पाँव की अँगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

तुम क्या उसकी तरफ़ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता फाड़ लिया?

मैं समझता हूँ। तुम्हारी अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यंग्य-मुसकान भी समझता हूँ।

1. उपर्युक्त गद्यांश में किस व्यक्तित्व की चर्चा की गई है?

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश में कथा सम्राट प्रेमचंद के व्यक्तित्व की चर्चा की गई है।

2. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भो को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर : टीला रस्ते की रुकावट का प्रतीक है। इस पाठ में टीला शब्द सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा भेदभाव को दर्शाता है क्योंकि यह मानव के सामजिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न करता हैं।

3. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो? - पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रेमचंद ने सामाजिक बुराइयों को अपनाना तो दूर उनकी तरफ देखा भी नहीं। प्रेमचंद गलत वस्तु या व्यक्ति को हाथ से नहीं पैर से ही सम्बोधित करना उचित समझते है।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती क्यों थी?

उत्तर : मैना अपने मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि वह मकान उसकी पैतृक धरोहर थी। उसी में मैना की बचपन की, पिता की, परिवार की यादें समाई हुई थीं। वह उसके जीवन का भी सहारा हो सकता था। इसलिए वह उसे बचाना चाहती थी।

2. 'मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।' इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर : आज लड़कियों के जन्म के संबंध में स्थितियाँ थोड़ी बदली हैं। आज शिक्षा के माध्यम से लोग सजग हो रहें हैं। लड़का-लड़की का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा हैं। आज लड़कियों को लड़कों की तरह पढ़ाया-लिखाया भी जाता है। परंतु लड़कियों के साथ

भेदभाव पूरी-तरह समाप्त नहीं हुआ है। आज भी भ्रूण और दहेज हत्याएँ हो रही हैं, इनके लिए सरकार कड़े कानून बना रहीं है।

3. उस समय के तिब्बत में हथियार का क़ानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

   उत्तर : उस समय तिब्बत के पहाड़ों की यात्रा सुरक्षित नहीं थी। लोगों को डाकुओं का भय बना रहता था। डाकू पहले लोगों को मार देते और फिर देखते की उनके पास पैसा है या नहीं। तथा तिब्बत में हथियार रखने से सम्बंधित कोई क़ानून नहीं था। इस कारण लोग खुलेआम पिस्तौल बन्दूक आदि रखते थे। साथ ही, वहाँ अनेक निर्जन स्थान भी थे, जहाँ पुलिस का प्रबंध नहीं था।

4. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्याबरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

   उत्तर : सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के सामने केरल की साइलेंट-वैली संबन्धी खतरों की बात उठाई होगी। उस समय केरल पर रेगिस्तानी हवा के झोंको का खतरा मंडरा रहा था। वहाँ का पर्यावरण दूषित हो रहा था। प्रधानमन्त्री को वातावरण की सुरक्षा का ध्यान था। पर्यावरण के दूषित होने के खतरे के बारे में सोचकर उनकी आँखे नम हो गई।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2+2+1)=5

माँ की समझाइश के बाद
दक्षिण दिशा में पैर करके मैं कभी नही सोया
और इससे इतना फायदा जरुर हुआ
दक्षिण दिशा पहचानने में
मुझे कभी मुश्किल का सामना नही करना पड़ा
मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया

और हमेशा मुझे माँ याद आई
दक्षिण को लाँघ लेना सम्भव नहीं था
होता छोर तक पहुँच पाना
तो यमराज का घर देख लेता
पर आज जिधर पैर करके सोओं
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आखों सहित विराजते हैं
माँ अब नही है
और यमराज की दिशा भी अब वह नहीं रही
जो माँ जानती थी

1. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?
   उत्तर : कवि को बचपन में माँ ने यह सिखाया था कि दक्षिण दिशा की ओर यमराज का घर होता है अत: वहाँ पर कभी अपने पैर करके नहीं सोना उस तरफ़ पैर रखकर सोना यमराज को नाराज करने के समान है। माँ द्वारा मिली इस सीख के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?
   उत्तर : दक्षिण दिशा का कोई ओर-छोर नहीं होता हम यह नहीं कह सकते कि इस निश्चित स्थान पर दक्षिण दिशा समाप्त हो गई है।

3. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?
   उत्तर : आज मनुष्य का जीवन कहीं भी सुरक्षित नहीं रह गया है। चारों और असंतोष, हिंसा और विध्वंसक ताकतें फैली हुई हैं।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=8

1. मोट खींचता लगा पेट पर जुआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : अँग्रेज सरकार देश के स्वाधीनता सैनानियों से पशुओं की तरह काम करवाती थी जिससे इन लोगों का स्वाभिमान और देश के प्रति देश प्रेम की भावना ख़त्म हो जाए। परन्तु सैनानी सारे अत्याचार को सहते हुए भी अपनी जिद्द पर अडिग है जिससे अँग्रेज सरकार की सारी अकड़ निकल जाती है।

2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?

   उत्तर : हिन्दू अपने ईश्वर को मंदिर तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में ढूँढता है तो मुस्लिम अपने अल्लाह को काबे या मस्जिद में और मनुष्य ईश्वर को योग, वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक क्रियाओं में खोजता फिरता है।

3. क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी, क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति का आशय यह है कि नायिका को यह भ्रम था कि उसके प्रिय अर्थात् मेघ नहीं आएँगे परन्तु बादल रूपी नायक के आने से उसकी सारी शंकाएँ मिट जाती है और वह क्षमा याचना करने लगती है।

4. 'सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

   उत्तर : सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चों के वंचित रहने के मुख्य कारण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक मज़बूरी है। समाज के गरीब तबके के बच्चों को न चाहते हुए भी अपने माता-पिता का हाथ बँटाना पड़ता है। जहाँ जीविका के लिए इतनी मेहनत करनी पड़े तब सुख-सुविधाओं की कल्पना करना असंभव सा लगता है।

प्र. 9. "....आपके लाड़ले बेटे के की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं ...." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है? 4

उपर्युक्त कथन के माध्यम से उमा शंकर की निम्न कमियों की ओर ध्यान दिलाना चाहती है -

- शंकर का चरित्र अच्छा नहीं है। लड़कियों के हॉस्टल के चक्कर काटते हुए वह पकड़ा जा चूका है।
- उसका अपना निजी कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह अपने पिता के पीछे चलने वाला बेचारा जीव है,जैसा कहा जाता है वैसा ही करता है।
- वह शारीरिक रूप से भी समर्थ नहीं है। वह शरीर से कमजोर, झुककर तथा उससे तन कर भी बैठा भी नहीं जाता।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

प्लास्टिक की थैलियाँ - एक अभिशाप

आधुनिक काल में विज्ञान नें जहाँ मनुष्य को अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं, वहीं विज्ञान ने अनेक भयंकर समस्याओं को जन्म दिया है। प्लास्टिक की समस्या भी ऐसी ही समस्या है। आज से 20-25 वर्ष पूर्व इस प्रकार की कोई समस्या नहीं थी, लोग सामान लाने के लिए कपड़े के थैलों का प्रयोग करते थे और छोटे सामान के लिए कागज़ के लिफाफों का उपयोग होता था, किंतु आज सड़क, बाग-बगीचे हर जगह प्लास्टिक की थैलियाँ उड़ती दिखाई देती हैं। प्लास्टिक की ये थैलियाँ अनेक रोगों का कारण तो बनती ही हैं, पशुओं की मौत का कारण भी हैं। यदि इन्हें जलाया जाता है तो इनका दुर्गंध युक्त धुआँ श्वास संबंधी रोगों का कारण बनता है। आज इस प्रकोप से बचने का सबसे अच्छा उपाय है कि इनका उपयोग बंद कर दिया जाए। इस प्रकार समाज को सचेत कर प्लास्टिक के प्रकोप से बचाया जा सकता है।

प्रकृति

मनुष्य प्रकृति से सदा से जुड़ा हुआ है। प्रकृति परमात्मा की अनुपम कृति है। प्रकृति का पल-पल परिवर्तित रुप उल्लासमय है, हदयाकर्षक है। वह सर्वस्व लुटाकर भी हँसती रहती है। प्रकृति अपने हजार रूपों में हमारे सामने खुशियों का ख़जाना लाती है। प्रकृति हमें सिखाती है कि जीवन हरपल आनंद से सराबोर है। नदियों का कल कल करता संगीत, झूमते गाते पेड़, एवं छोटे छोटे जीव हमें सिखाते हैं कि जीवन को ऐसे जियो की जीवन का हर पल खुशियों की सौगात बन जाये।

पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ।
सोहनलाल द्विवेदी

प्रकृति की गोद में वो सुख है, जो हज़ारों की संपत्ति पाकर भी नहीं मिलता। इसके सानिध्य में रहकर मनुष्य जीने की प्रेरणा पाता है।

प्र. 11. आपके विदयालय में कुछ अतिथि आए थे, जिनकी देखभाल की जिम्मेदारी आपको सौंपी गई थी। अपनी माता जी को पत्र लिखकर बताइए कि वे अतिथि विद्यालय में क्यों आए थे और उनके लिए क्या-क्या किया। 5

छात्रावास
यशवंत स्कूल
नई दिल्ली
8 नवंबर, 20XX

पूजनीय माताजी,
सादर चरण स्पर्श।

आशा हैं कि आप सकुशल एवं स्वस्थ होंगे। मैं ठीक हूँ और परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूँ।

आज मेरे विदयालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ अंधेरी नगरी चौपट राजा नामक नाटक का मंचन भी किया गया। इस कार्यक्रम की तैयारी कई दिन पहले ही आरंभ हो गई थी।

इस कार्यक्रम के लिए सभी विद्यार्थियों को कुछ न कुछ जिम्मेंदारी दी गई थी। मुझे मुख्य अतिथि की देखरेख की जिम्मेंदारी सौंपी गई थी। मुझे पूरे समय उनके साथ ही रहना था ताकि उन्हें जो भी चाहिए उसकी व्यवस्था में शीघ्र करवा दूँ।

आपके आर्शीवाद से मैंने अपनी जिम्मेदारी बहुत अच्छी तरह निभाई।

अतिथि, मेरे शिक्षक से मेरी बहुत प्रशंसा कर रहे थे।

पिताजी को मेरा प्रणाम एवं छोटी को मेरा प्यार दीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

गौरव।

प्र. 12 दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विषय में माता और पुत्री के बीच होनेवाला संवाद लिखिए। 5

माता : आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रह गया। मैं तो कहती हूँ - इससे दूर ही अच्छे।

पुत्री : हाँ, माँ ! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं।

माता : हो सकता है, पर अधिकांश कार्यक्रम तो ऐसे हैं जिनका न कोई उद्देश्य है और न ही कोई औचित्य।

पुत्री : परंतु कितने ऐसे कार्यक्रम भी आते हैं जो हमारे ज्ञान को बढ़ाते हैं तथा स्वस्थ मनोरंजन भी करते हैं।

माता : मुझे तो अधिकतर फिल्मी कार्यक्रम ही देखने मिलते है। इसका नैतिक मूल्यों से कोई संबंध ही नहीं। आज ये विद्यार्थी के पतन का कारण बने हुए हैं।

पुत्री : हाँ, माँ ! परंतु अच्छे कार्यक्रमों का चयन कर कुछ समय के लिए देखने में कोई बुराई नहीं।

माता : तुम ठीक कह रही हो, परंतु यह बात याद रखना।